# एक उद्देश्यपूर्ण जीवन जीना!

आनंददायक और उद्देश्य से भरा जीवन, संबंधों, प्रेम और विश्वास पर आधारित होता है। यदि आप अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना पर अधिक स्पष्टता की तलाश में हैं, तो इस योजना को अपने लक्ष्य और खोज पर ध्यान केंद्रित करने में मदद के लिए शामिल करें। डेविड जे. स्वांत द्वारा लिखी गयी पुस्तक, "आउट ऑफ़ दिस वर्ल्ड: ए क्रिश्चियन्स गाइड टू ग्रोथ एंड पर्पस" से लिया गया।

Copyright © 2013 David J. Swandt. All Rights Reserved.

Published under license agreement by Twenty20 Faith, Inc. (USA). Not intended for resale. For more information visit:

www.twenty20faith.org

## "स्वर्णिम नियम"

चाहे एक राजनेता हो, एक व्यापारी अगुवा हो, एक उत्साहवर्धक वक्ता हो, या केवल एक आम व्यक्ति हो, जीवन के सभी क्षेत्रों के लोग कभी-कभी स्वर्णिम नियम के गुणों का संदर्भ देते हैं। यहाँ तक कि, लगभग हर किसी ने इसके बारे में सुना होता है और इसका अर्थ जानते हैं।

अधिकतर लोग इस बात से सहमत होंगे कि "दूसरों के साथ वैसा ही करना जो आप अपने साथ करते" समाज का एक आवश्यक हिस्सा है। कई मामलों में, यह वह आवरण होता है जो हमारी संस्कृति, परिवार और मित्रता को एक साथ बनाए रखता है। स्वर्णिम नियम दूसरों की सेवा करने, उदारता दिखाने और ज़रूरतमंदों की सहायता करने की योग्यता को दर्शाता है।

यीशु ही स्वर्णिम नियम का रचियता था, जो सफल मसीही जीवन के लिए प्रमुख प्राथमिकताओं में से एक है।

मसीही होने के नाते, परमेश्वर हममें से प्रत्येक को उस स्तर पर अपने विश्वास को ले जाने के लिए कहते हैं जो केवल परमेश्वर में विश्वास करने से परे है। उनकी इच्छा यह है कि हम में से प्रत्येक दूसरों के जीवन को छूकर अपने विश्वास को क्रियान्वित करें, और इस प्रकार उनके प्रति प्रेम और करुणा को दिखाकर परमेश्वर की महिमा करें। यही वास्तव में स्वर्णिम नियम द्वारा जीना है।

## "सफल रिश्ते की कुंजी"

प्रत्येक रिश्ते के, चाहे किसी मित्र, परिवार के सदस्य, जीवनसाथी या यहां तक कि परमेश्वर के साथ ही क्यों न हो, दो मौलिक घटक होते हैं जो इसे सफल बनाते हैं: व्यक्तियों के बीच प्रेम और स्नेह का बांटा जाना, और उस प्रेम को व्यवहार में लाना।

सच्चाई यह है कि असली प्रेम हमेशा कर्म के साथ जुड़ा होता है; एक सच्चा दोस्त दूसरे को जरूरत में देखकर मदद के साथ प्रतिक्रिया देगा। परमेश्वर के साथ के हमारे रिश्ते में भी यही सच है। परमेश्वर के लिए एक सच्चा प्रेम कर्म के साथ होता है; हमारे चारों ओर के लोगों के जीवन को छूते हुए परमेश्वर के हृदय को छूना।

दूसरों के साथ सबसे अच्छे रिश्ते को निभाना परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते के साथ शुरू होता है। यहाँ तक कि, परमेश्वर आग्रह करता है कि दूसरों के साथ हमारे संबंध उसके साथ के हमारे रिश्ते का विस्तार हो।

विश्वासियों के रूप में, परमेश्वर के साथ हमारे लंबवत संबंध और एक दूसरे के साथ हमारे क्षैतिज संबंध परमेश्वर के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं –अर्थात् उसे प्यार करना और दूसरों से भी प्यार करना।

## "परमेश्वर के लिए हमारे प्यार को बढाना"

परमेश्वर के प्रति प्यार को विकसित करना शायद किसी मित्र या परिवार के सदस्य की तुलना में थोड़ा अधिक चुनौतीपूर्ण होता है। एक प्राथमिक कारण यह है कि हम शारीरिक रूप से परमेश्वर को नहीं देख सकते हैं। इसलिए परमेश्वर के प्रति प्रेम को बनाए रखने और बढ़ाने में विश्वास की आवश्यकता है।

विश्वास हमें अपने हृदय से सीधे परमेश्वर को वास्तविक प्यार करने की अनुमति देता है, भले ही हम उसे अपनी शारीरिक आंखों से नहीं देख पाते हैं। परमेश्वर के प्रति हमारे प्यार को बढाने के लिए, हमारे मसीही जीवन में विश्वास को सक्रिय होना चाहिए।

जैसे-जैसे हम परमेश्वर के वचन को पढ़ते हैं, अपने और दूसरों के जीवन में उनके प्यार और भागीदारी पर ध्यान देते हैं, और प्रार्थना में उनके साथ संगति करते हैं, तब हम परमेश्वर को और अधिक जानना शुरू करते हैं। समय के साथ उसे और अधिक जानना हमारे जीवन में उसके प्रति एक वास्तविक परिपक्व प्यार को पोषित करता है।

हमारे विश्वास के द्वारा परमेश्वर के प्रति उस प्यार में बढ़ना अपने व्यवहार के माध्यम से प्यार को प्रदर्शित करने पर निर्भर करता है। विश्वास के माध्यम से परमेश्वर के लिए हमारा प्यार, जो कि कर्म के माध्यम से परमेश्वर के प्रति हमारा समर्पण है, वही उनके साथ एक सफल, बढ़ते संबंध के लिए आवश्यक घटक है।

जबकि परमेश्वर के लिए हमारा प्यार निश्चित रूप से अपने विश्वास को व्यवहार में डालने के परिणामस्वरूप ही बढ़ेगा, तो यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि ये कार्य परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह को हमारे लिए नहीं कमाते।

सच्चाई यह है कि हमारे द्वारा परमेश्वर को जानने से पहले ही उसने हमें बेहद और बिना किसी शर्त के प्रेम किया है। परमेश्वर का प्रेम हमारा सच्चा स्रोत है: उसके लिए हमारा प्रेम और दूसरों के लिए भी।

## "दूसरों के प्रति प्रेम को बढ़ाना"

हमारे जीवन में परमेश्वर के लिए एक जीवंत और बढ़ते प्रेम को कार्य करते रहने के साथ, अन्य लोगों से भी प्रेम करने की हमारी क्षमता भी स्वाभाविक रूप से बढ़ेगी। दूसरों के प्रति एक परिपक्व प्रेम के साथ उस प्रेम को प्रदर्शित करने की इच्छा भी बढ़ती जाती है, और इस प्रकार हम एक सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य को पूरा करते हैं जिसके लिए परमेश्वर ने हमें बनाया – अर्थात् दूसरों के लिए अच्छा काम करने के लिए।

यह बात परमेश्वर की योजना में रही है कि हम कर्म के साथ प्रेम करें। हममें से प्रत्येक को अच्छे कर्मों के माध्यम से दूसरों के जीवन को छूने के लिए परमेश्वर के उत्कृष्ट योजना में एक स्थान है।

हर बार जब हम एक दूसरे के जीवन को एक दयालु शब्द के साथ छूते हैं, या किसी ज़रूरत में प्रतिक्रिया देते हैं, या एक दर्दभरे हृदय से निकलने वाले बातों की तरफ अपना कान लगाते हैं, तो हम न केवल अपने प्रेम को, बल्कि हमारे द्वारा परमेश्वर के प्रेम को भी व्यक्त करते हैं। इस तरह से, हम एक ऐसी दुनिया में परमेश्वर की महिमा को उज्ज्वल करने के लिए महत्वपूर्ण माध्यम बन जाते हैं जो अन्यथा अंधेरे और निराशा से भरी है।

हमारी रोशनी को चमकाना वास्तव में परमेश्वर की ज्योति को हमारे माध्यम से चमकाना है। दूसरों के लिए परमेश्वर की महिमा को चमकाने के तीन महत्वपूर्ण तरीके हैं:

1. एक प्रभावी गवाह बनें;

2. दूसरों की सेवा करें;

3. मसीहियों के साथ संगति करें।

इन तीन तरीकों में अपने विश्वास को व्यवहार में लाना दूसरों को परमेश्वर के प्रेम, कृपा और दया का अनुभव करने में सक्षम बनाता है, सबकुछ उसकी महिमा के लिए।

## "एक प्रभावी गवाह बनें"

यह जानना कि हमारी रोजमर्रा की दुनिया में हमें एक प्रभावी गवाह कैसे बनना है, इस बात की समझ के साथ शुरू होती है कि परमेश्वर क्या चाहते हैं कि दूसरे लोग हमारे जीवनों में देखें। निश्चित रूप से संक्षिप्त जवाब होगा, यीशु को। लेकिन इसका क्या मतलब है?

यीशु ने एक आदर्श उदाहरण दिया कि कैसे परमेश्वर चाहते हैं कि हम जीयें। जबकि यीशु आज की दुनिया की तुलना में एक बिल्कुल भिन्न दुनिया में जीवन जीते थे, तब भी उसने परमेश्वर के पूर्ण चरित्र को जीया और हमारी आधुनिक दुनिया के लिए एक प्रासंगिक उदाहरण प्रदान किया है।

यह परमेश्वर का चरित्र ही है जिसे वह हमारे जीवन में विकसित होना और दूसरों द्वारा देखे जाने की अपेक्षा करता है। यह केवल यीशु के साथ हमारे व्यक्तिगत रिश्तों के माध्यम से हासिल किया जाता है।

जैसे कि एक डाली जो दाखलता में बनी रहती है, जिससे वह अपने जीवन को पाती है वही फल लाती है, इसलिए यह हमारे लिए भी ऐसा ही है जो यीशु के साथ रिश्ते में रहते हैं - हम फल लाते हैं - या दूसरों को अपने जीवन के माध्यम से परमेश्वर के चरित्र का प्रदर्शन करते हैं।

जब परमेश्वर का चरित्र हमारे और हमारे माध्यम से काम कर रहा है - उसका प्यार, आनंद, मेल, धीरज, दयालुता, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम, तो हम अपने रोजमर्रा के जीवन में एक प्रभावी गवाह बन जाते हैं।

जैसा कि यह यीशु के दिनों में था, हमारे जीवन के माध्यम से परमेश्वर के चरित्र की बाहरी, सक्रिय अभिव्यक्ति - आत्मा का फल – भी अचूक है। यह मसीही और गैर-मसीही दोनों का ध्यान आकर्षित करता है, और किसी के द्वारा इसकी पूछताछ करना असामान्य बात नहीं है।

तैयार रहें। जब आप सबसे कम अपेक्षा करते हैं तब भी कोई आपके विषय में पूछताछ या निगरानी कर सकता है। उद्धार की आपकी व्यक्तिगत गवाही और आपके स्वयं के जीवन में होने वाले परमेश्वर के अद्भुत काम एक महान प्रारंभिक बिंदु है। उन्हें अपनी कलीसिया या संगति में आमंत्रित करें, और जब वे परमेश्वर के साथ एक संबंध को तलाशते हैं तब उन्हें प्रोत्साहित करें!

## "दूसरों की सेवा करें"

किसी की जरूरत के समय प्रतिक्रिया करने के लिए उपलब्ध होना ही सेवा की परिभाषा है। उस प्रतिक्रिया के लिए हमारे समय, प्रतिभा, संसाधन और प्रयास की आवश्यकता हो सकती है; लेकिन परमेश्वर और दूसरों के लिए प्यार से भरकर सेवा करना जीवन के सबसे आनंददायक और पुरस्कृत अनुभवों में से एक हो सकता है।

दूसरों की जरूरतों के प्रति प्रतिक्रिया कई रूपों में आ सकता है और मसीहियों और गैर-मसीहियों की जरूरतों पर ध्यान केंद्रित कर सकता है। स्थानीय कलीसिया में व्यक्तिगत रूप से या टीम के हिस्से के रूप में सेवा करने के अवसर हमेशा होते हैं। आपके पास देने के लिए अविश्वसनीय रूप से मूल्यवान कुछ है!

ऐसे अवसर भी आते हैं जो लोगों के साथ आमने सामने के संपर्क में ही उत्पन्न होते हैं, या केवल किसी की आवश्यकता को देखकर, अनचाही सहायता के साथ प्रतिक्रिया देते हैं।

आपके द्वारा दी गई कोई भी प्रतिक्रिया, चाहे समय, संसाधन, प्रतिभा या केवल एक उत्साहवर्धक शब्द, सेवा का एक कर्म है। लेकिन परमेश्वर यह भी समझते हैं कि जो कुछ भी हम पेश कर सकते हैं उसमें सीमित क्षमता है, इसलिए वह हमें समर्पण के दौरान ज़िम्मेदारी और अच्छे भंडारीपण को दिखाने की उम्मीद करता है।

हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा हर्ष से देने के लिए है। जबकि कभी-कभी हम में से कुछ के लिए "न" कहना मुश्किल होता है, लेकिन सच्चाई यह है कि अपने आप को अति-उत्साहित करना अंततः हम से वह हर्ष और खुशी को चुरा सकते हैं जो परमेश्वर चाहते हैं कि हमारे पास हो जब हम सेवा करते हैं।

## "मसीहियों के साथ संगति"

अन्य विश्वासियों को प्रोत्साहन, प्रेम और शक्ति देना हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकताओं में से एक है। तथ्य यह है कि हमें एक दूसरे की जरूरत है। इसी तरह से परमेश्वर ने इसे बनाया है। परमेश्वर किसी को भी "अकेले रहने देना" नहीं चाहता।

सच्चाई यह है कि अन्य मसीहियों के साथ संबंध बनाना हमारे विकास के लिए महत्वपूर्ण है। परमेश्वर अक्सर हमारे लिए एक दूसरे की सेवकाई करने या प्रोत्साहित करने के लिए "दैवीय नियुक्तियां" स्थापित करता है, जो कि केवल हम ही कर सकते हैं।

गिनती की ताकत का सिद्धांत मसीहियों के लिए भी लागू होता है, और साथी विश्वासियों के साथ मजबूत संबंध होने से हमें परमेश्वर के साथ चलने में मदद मिलती है!

स्थानीय कलीसिया की स्थापना में परमेश्वर की योजना आप के लिए अन्य विश्वासियों से जुड़े रहने के लिए था। उनके साथ शामिल हों और मसीह में अपने साथी भाइयों और बहनों के साथ आशीष देने और प्राप्त करने के लाभों का आनंद उठायें!